आओ माथापच्ची करें, सीरीज़ नं. 9

बूझो तो जानें!

एकलव्य का प्रकाशन

बूझो तो जानें!

मधु पन्त
धर्म प्रकाश

चित्रांकन
शीर्षेन्दु घोष
जोएल गिल

एकलव्य का प्रकाशन

स्कूल गणित कार्यक्रम,
सेन्टर फॉर साईंस एजुकेशन एंड कम्युनिकेशन (CSEC),
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा विकसित

आओ माथापच्ची करें सीरीज़, नं. 9

बूझो तो जानें

लेखकः मधु पन्त, धर्म प्रकाश
चित्रः शीर्षेन्दू घोष, जोएल गिल

प्रथम संस्करणः जून 2007 / 5000 प्रतियाँ
"पराग" इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
70gsm मेपलिथो व 150gsm कार्डशीट (कवर) पर प्रकाशित
ISBN: 978-81-89976-00-2
मूल्य : 9.00 रुपए

प्रकाशक : **एकलव्य**
ई-7/ HIG 453, अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 246 3380, 246 4824
फैक्सः (0755) 246 1703
www.eklavya.in
ईमेलः सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः श्रेया ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 427 5001

1

दस मीटर का लम्बा कपड़ा
दस टुकड़ों में आओ बाँटें।
इक मीटर हर बार कटे तो
कितनी बार उसे हम काटें?

2

नौ सिक्कों को
तीन पंक्ति में
ऐसे रक्खो भाई,
हर पंक्ति में चार-चार
सिक्के पड़ते दिखलाई।

3

एक ताल ऐसा जादू का
खिलते रहते उसमें फूल।
हर दिन पहले दिन से दूने
हो जाते हैं बढ़कर फूल।
बारह दिन में अगर भर गया
ताल फूलों से भरपूर,
बोलो! कितने दिन में उसमें
चौथाई भर पाएँ फूल?
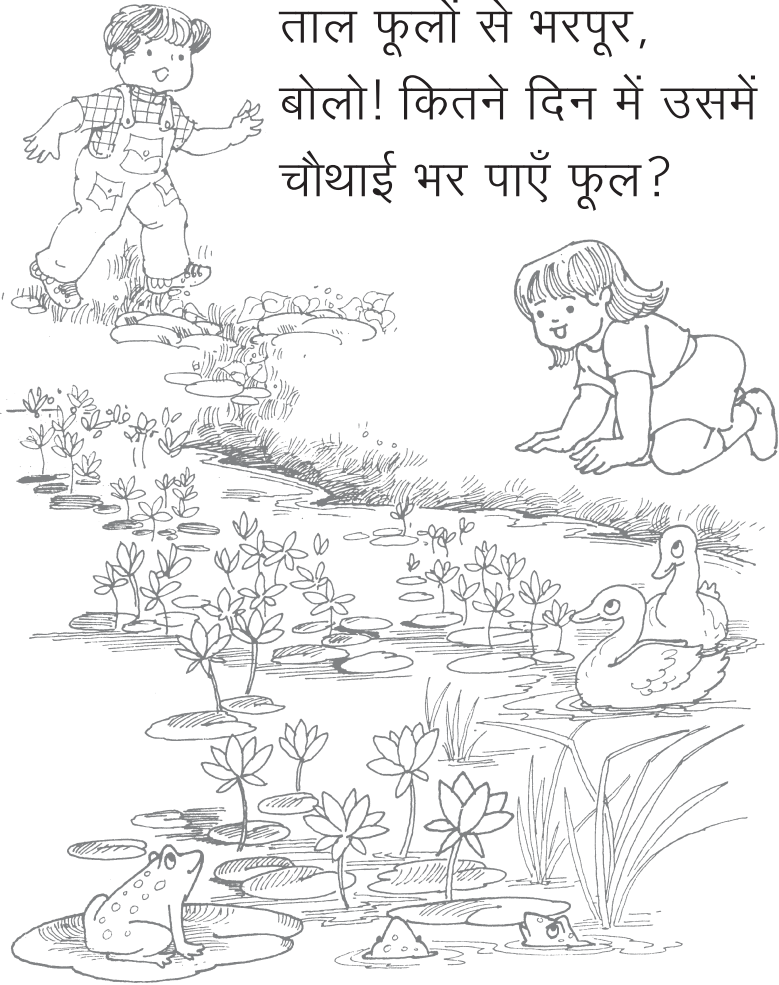
4

देखा राजा, सात रानियाँ
जब मैं जाता दिल्ली।
हर रानी की सात लड़कियाँ
लिए हुए थीं बिल्ली।
हर लड़की की सात बिल्लियाँ,
हर बिल्ली के बच्चे सात।
कितने जन जाते थे दिल्ली?
बोलो! तभी बनेगी बात।

5

उस बिल्ले की सुन लो बात।
एक पेड़ पर चढ़ता रात।
एक मिनट तक जब वो चढ़ता,
तभी तीन फुट आगे बढ़ता।
और फिसलता दो फुट नीचे,
चढ़ता फिर वो आँखें मींचे।
ग्यारह फुट का ऊँचा पेड़,
पर चढ़ने में लगती देर।
बोलो! बिल्ला कब चढ़ पाया,
कै मिनटों में ऊपर आया?

एक डिब्बे में छः नारंगी।
बाँटो ऐसे छः बच्चों में
इक नारंगी बच भी जाए
उस नारंगी के डिब्बे में।
बिन काटे हम बाँटें कैसे,
साबुत सब पा जाएँ जैसे।

6

7

आज समस्या बेढब आई,
देखो कितने खड़े सिपाही।
दो-दो की जब लाइन बने तो
बच जाता है एक सिपाही।
अगर तीन की लाइन बनाओ,
तो भी बचता वही सिपाही।
अगर चार की लाइन बना लो,
वही अकेला फिर तुम पा लो।
किन्तु लाइन हो अगर पाँच की,
गिनती पूरी होती सबकी।
नहीं बचा अब कोई भाई,
बोलो कितने सभी सिपाही?
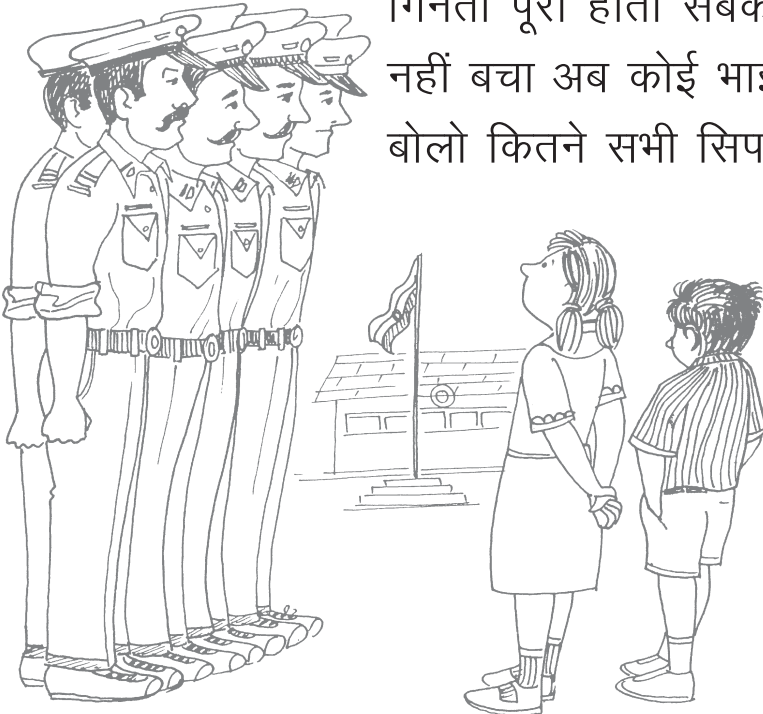
8

घड़ी बजाती टन-टन-टन,
समय बताती है हर दम।
चार बजे जब घण्टे बजते,
सात सेकण्ड उसी में लगते।
बोलो जब बारह बजते हैं,
कब तक वे घण्टे बजते हैं?

9

नौ सिक्के हैं पास हमारे,
इक हलका है खोटा।
सभी एक-से ही दिखते हैं,
बड़ा न कोई छोटा।
कम से कम कै बार तौलकर
ढूँढ सकें हम खोटा?
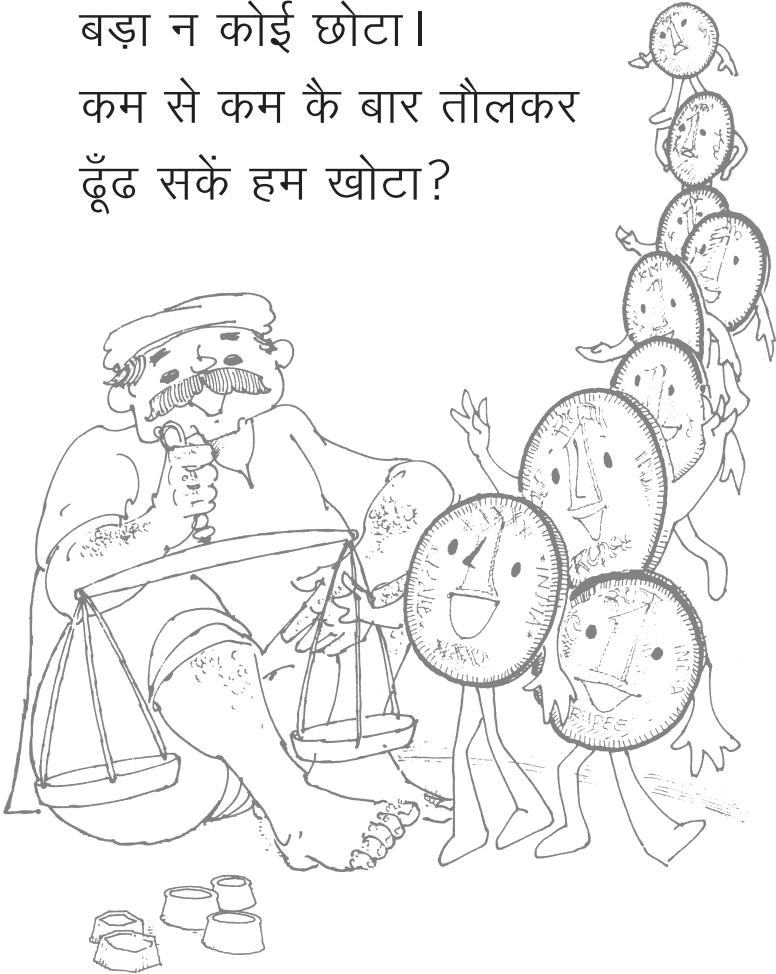
10

एक खेत ऐसा है भइया
चौड़ा मीटर तीन।
लम्बाई भी सुनो खेत की
केवल मीटर तीन।
बाहर-बाहर हर मीटर पर
पेड़ लगाएँ आओ।
कितने पेड़ लगेंगे झटपट
हमको यह बतलाओ।

11

तीन दोस्त मिल चले घूमने,
रोटी लिए हुए थे साथ।
तीन रोटियाँ पहला लाया,
चार दूसरे के थीं हाथ।
पाँच तीसरे ने रख ली थीं,
बड़ा सुहाना समय प्रभात।
रोटी ज्यों ही खाने बैठे,
भूखा इक आ पहुँचा पास।
खाईं रोटियाँ एक बराबर,
सबने की हिलमिलकर बात।
रुपए तीन दिए भूखे ने
और मिलाया सबसे हाथ।
मगर समस्या ये उठ आई,
कितने रुपए किसके हाथ?
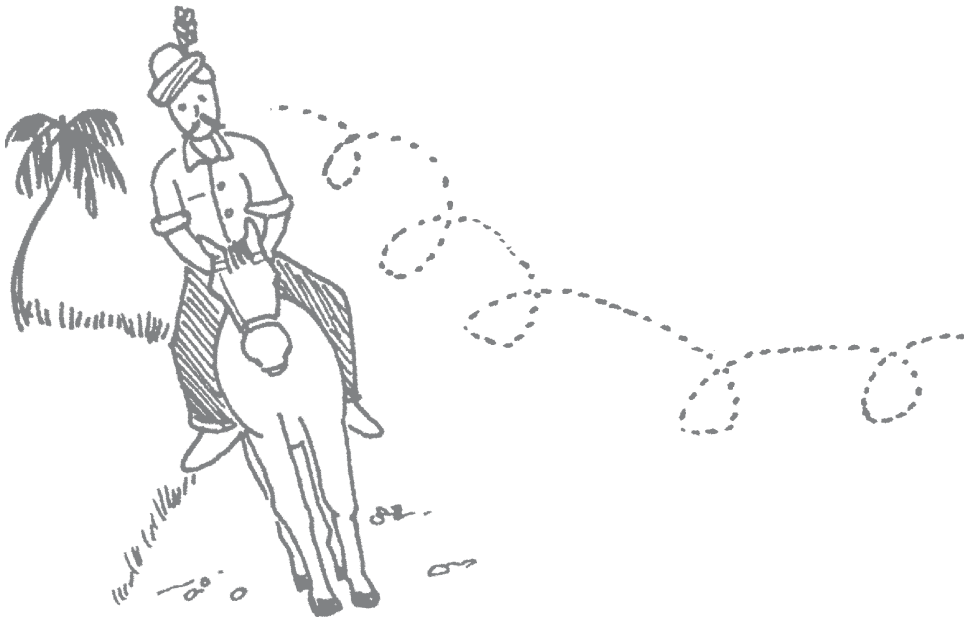
12

घुड़सवार हैं दो घोड़ों पर,
दो सौ मीटर दूर।
एक सेकण्ड में वे दस मीटर
चल पाते भरपूर।
ज्यों ही चलना शुरू किया,
मक्खी ने की शैतानी।

इक सवार की उड़ी नाक से
जल्दी मक्खी रानी।
फिर दूजी पर वो जा पहुँची,
दौड़ी पीछे-आगे।
जब तक दो सवार मिल पाए,
मक्खी जाए भागे।
एक सेकण्ड में चलती मक्खी
पच्चीस मीटर दूर।
कितनी दूरी तय कर डाली
मक्खी ने भरपूर?

13

चली एक गाड़ी दिल्ली से
आगरा की ओर,
चली दूसरी आगरा से
फिर दिल्ली की ओर।
मथुरा में दोनों मिल जातीं,
अरे समस्या भारी,
दिल्ली से ज़्यादा दूरी पर
कौन खड़ी है गाड़ी?

14
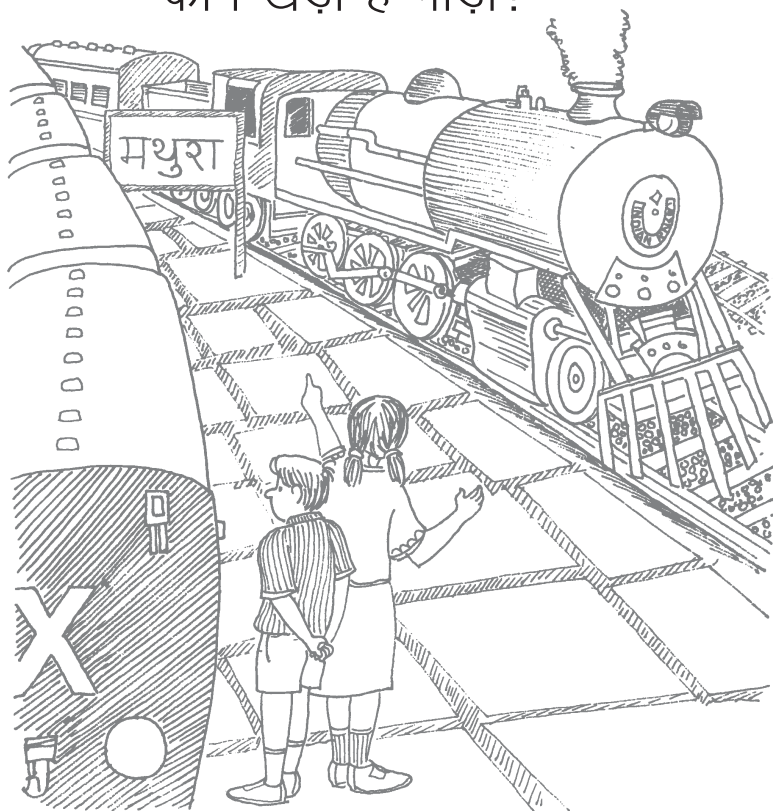
इक रुपया और दस पैसे की
इक बोतल और ढक्कन।
बोतल एक अधिक ढक्कन से,
इक रुपया कम ढक्कन।
अब ये झटपट बात बताओ
है कितने का ढक्कन?
सही बताओ तब तुम पाओ
झटपट मिश्री मक्खन।
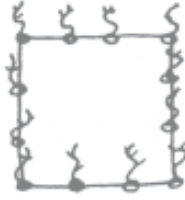
एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इन साधनों में किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **शैक्षणिक संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिंदवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

स्कूल गणित कार्यक्रम,
सेन्टर फॉर साईंस एजुकेशन एंड कम्युनिकेशन (CSEC),
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा विकसित

बच्चों के लिए

बच्चो! पहेलियाँ तो तुमने बहुत-सी सुनी होंगी और बूझी भी होंगी। बड़ा मज़ा आता है न पहेलियाँ बूझने में! प्रस्तुत पहेलियों में से कुछ आज की नहीं हैं बल्कि बड़ी पुरानी हैं – दादी की, नानी की कहानी से भी पुरानी। इन पहेलियों से केवल मनोरंजन ही नहीं होता बल्कि दिमागी कसरत भी होती है। आज यह दिमागी कसरत होनी और भी ज़रूरी है, क्योंकि कैलकुलेटर व कम्प्यूटर के युग में दिमाग पर ज़ोर कुछ कम ही डाला जा रहा है।

इस पुस्तक के द्वारा खेल ही खेल में मौखिक गणित एवं तर्क का अभ्यास तो होगा ही, साथ ही गणित में तुम्हारी अभिरुचि भी बढ़ेगी। इतना ही नहीं, इस पुस्तक को पढ़ने के बाद शायद तुम स्वयं भी अपनी पहेलियाँ गढ़ सकोगे, और तब आएगा और भी मज़ा – जब लोग तुम्हारी पहेलियाँ बूझेंगे!

मधु पन्त
धर्म प्रकाश

माथापच्ची सीरीज़ की अन्य किताबें

- माचिस की तीलियों के रोचक खेलः 6 रुपए
- वर्ग पहेलीः 12 रुपए
- बूझो-बूझोः 6 रुपए
- माथापच्चीः 6 रुपए
- भूलभुलैयाँः 6 रुपए
- दर्पण से बूझोः 9 रुपए
- मनगणितः 8 रुपए
- नज़र का फेरः 9 रुपए

एकलव्य का प्रकाशन

parag

ISBN: 978-81-89976-00-2

मूल्य : 9.00 रुपए